ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class IX

Subject- Hindi Second Language

Topic -

पद – रैदास (रविदास)

❖ By- Acharya Sushil Sharma

©ISWK

स्पर्श भाग - 1 काव्य खण्ड

पद - रैदास

कवि परिचय

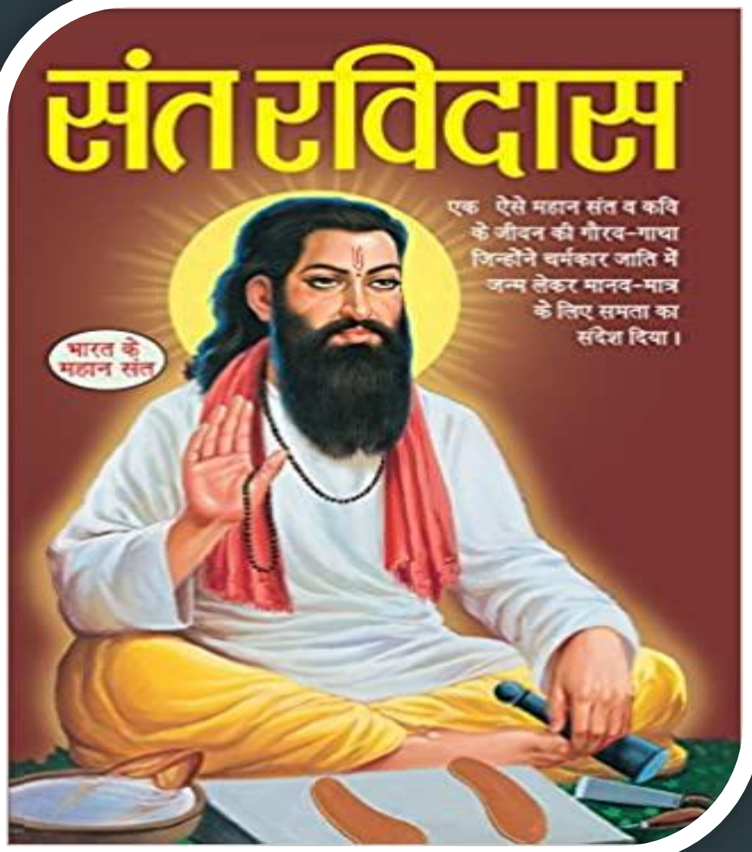

- रैदास नाम से विख्यात संत रविदास जी उच्च कोटि के संत थे ।
- जन्म 1388 में एवं निर्वाण 1518 में बनारस में हुआ माना जाता है ।
- दिखावे में विश्वास नहीं करते थे ।
- आपसी प्रेम एवं भाईचारे को सच्चा धर्म मानते थे ।
- भाषा - रैदास जी ने सरल व्यावहारिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया ।
- इनकी भाषा में अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू - फ़ारसी के शब्दों का भी मिश्रण है ।
- उपमा और रूपक अलंकारों का विशेष प्रयोग । { प्रिय अलंकार }
- सीधे - सादे पदों में कवि हृदय के भाव पाठक के मन को छू लेते हैं ।
- चालीस पद सिखों के धर्मग्रन्थ 'गुरुग्रंथ साहब' में भी सम्मिलित हैं ।
- रैदास दास्य भक्ति के संत माने जाते हैं ।

पद – 1

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।

प्रभु जी, तुम चन्दन हम पानी, जाकी अँग–अँग बास समानी ।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोती बरै दिन राती ।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।

प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

रैदास की भक्ति किस श्रेणी में आती है ? 6

सखा भक्ति | दाम्पत्य भक्ति
दास्य भक्ति | स्वामी भक्ति

रैदास को राम नाम की .... लग गई। *(सही विकल्प से रिक्त स्थान भरिए)*

भट | रट | घट | पट

चकोर पक्षी किसे निहारता रहता है ?

सूर्य को | चंद्रमा को
तारों को | पेड़ों को

रैदास के प्रभु माथे पर क्या धारण करते हैं ?

छत्र | टोपी

पगड़ी | रुमाल

दूसरे पद में गरीब निवाजु किसके लिए कहा है ?

प्रभु के लिए | रैदास के लिए

संतों के लिए | जगत के लिए

कौन नीच को ऊँच करते हुए नहीं डरता है ?

नामदेव | **गोबिंद**

सधना | **कबीर**

प्रभु	रैदास
चन्दन	पानी
आकाश में छाए काले बादल	जंगल में नाचने वाला मोर
चन्द्रमा	चकोर पक्षी
दीपक	दीपक की बाती
मोती	पिरोया हुआ धागा
स्वामी	दास

शब्दार्थ और	टिप्पणियाँ
बास	गंध, वास
समानी	समाना, बसा हुआ (समाहित)
घन	बादल
मोरा	मोर, मयूर
चितवत	देखना, निरखना
चकोर	एक पक्षी जो चन्द्रमा का परम प्रेमी माना जाता है
बाती	बत्ती
जोति	**ज्योति**
बरै	बढ़ाना, जलना
राती	रात्रि
सुहागा	सोने को शुद्ध करने के लिए प्रयोग में आने वाला क्षारद्रव्य
दासा	सेवक, दास

1. पहले पद में भगवान और भक्त की जिन-जिन चीजों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।

उत्तर:- पहले पद में भगवान और भक्त की तुलना चंदन-पानी, घन-वन-मोर, चन्द्र-चकोर, दीपक-बाती, मोती-धागा, सोना-सुहागा आदि से की गई है।

---

2. पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद-सौंदर्य आ गया है, जैसे – पानी, समानी आदि। इस पद में से अन्य तुकांत शब्द छाँटकरलिखिए।

उत्तर:- तुकांत शब्द – पानी-समानी, मोरा-चकोरा, बाती-राती, धागा-सुहागा, दासा-रैदासा।

---

3. पहले पद में कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबद्ध हैं। ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए – उदाहरण : दीपक बाती

उत्तर:- दीपक-बाती, मोती-धागा, स्वामी-दासा, चन्द्र-चकोरा, चंदन-पानी।

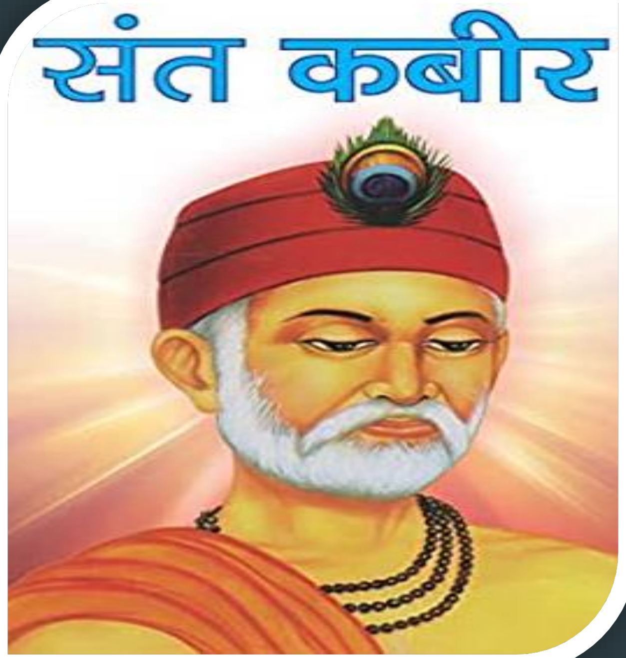

पद - 2

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ।
जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ।
नीचहु ऊच करै मेरा गोविंदु काहू ते न डरै ।
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ।
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै ।

शब्दार्थ और	टिप्पणियाँ
लाल	स्वामी
कउनु	कौन
गरीब निवाजु	दीन - दुखियों पर दया करने वाला
गुसईआ	स्वामी, गुसाई
माथै छत्रु धरै	मस्तक पर स्वामी होने का मुकुट धारण करता है
छोति	छुआछूत, अस्पृश्यता
जगत कउ लागै	संसार के लोगों को लगती है
ता पर तुहीं ढरै	उन पर द्रवित होता है
नीचहु ऊच करै	नीच को भी ऊँची पदवी प्रदान करता है
नामदेव	महाराष्ट्र के एक प्रसिध्द संत
तिलोचनु	एक प्रसिध्द आचार्य, ज्ञानदेव और नामदेव के गुरु
सधना	एक बहुत बड़े संत (संत नामदेव के समकालीन)
सैनु	ये भी एक प्रसिध्द संत (रामानन्द के समकालीन)
हरिजीउ	हरि जी से
सभै सरै	सब कुछ संभव हो जाता है

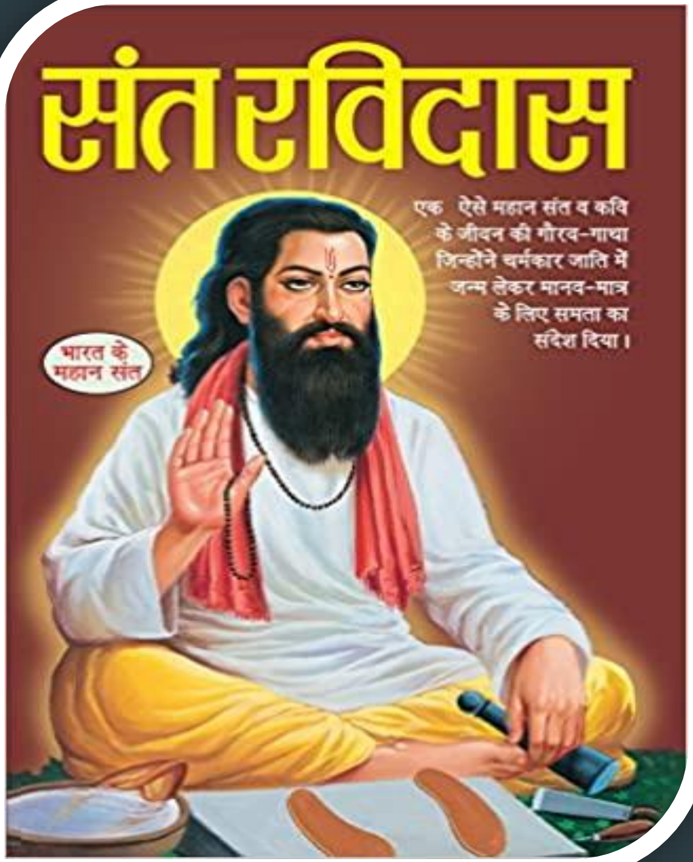

4. दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजु' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- दूसरे पद में 'गरीब निवाजु' ईश्वर को कहा गया है। ईश्वर को 'निवाजु ईश्वर' कहने का कारण यह है कि वे निम्न जाति के भक्तों को भी समभाव स्थान देते हैं, गरीबों का उद्धार करते हैं,उन्हें सम्मान दिलाते हैं, सबके कष्ट हरते हैं और भवसागर से पार उतारते हैं।

---

5. दूसरे पद की 'जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- इस पंक्ति का आशय यह है कि गरीब और निम्नवर्ग के लोगों को समाज सम्मान नहीं देता। उनसे दूर रहता है। परन्तु ईश्वर कोई भेदभाव न करके उन पर दया करते हैं, उनकीसहायता करते हैं, उनकी पीड़ा हरते हैं।

---

6. 'रैदास' ने अपने स्वामी को किन-किन नामों से पुकारा है?

उत्तर:- रैदास ने अपने स्वामी को गुसईया, गरीब, निवाजु, लाल, गोबिंद, हरि, प्रभु आदि नामों से पुकारा है।

7. निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए –
मोरा, चंद, बाती, जोति, बरै, राती, छत्रु, धरै, छोति, तुहीं, गुसइआ

उत्तर:-

मोरा	मोर
चंद	चाँद
बाती	बत्ती
जोति	ज्योति
बरै	जले
राती	रात
छत्रु	छत्र
धरै	धारण
छोति	छुआछूत
तुहीं	तुम ही
गुसइआ	गोसाई

8. नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए –

1. जाकी अँग-अँग बास समानी

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि जैसे चंदन के संपर्क में रहने से पानी में उसकी सुगंध फैल जाती है, उसी प्रकार एक भक्त के तन मन में ईश्वर भक्ति की सुगंध व्याप्त हो गई है।

2. जैसे चितवत चंद चकोरा

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि जैसे चकोर पक्षी सदा अपने चन्द्रमा की ओर ताकता रहता है उसी भाँति मैं (भक्त) भी सदा तुम्हारा प्रेम पाने के लिए तरसता रहता हूँ।

3. जाकी जोति बरै दिन राती

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि कवि स्वयं को दिए की बाती और ईश्वर को दीपक मानते है। ऐसा दीपक जो दिन-रात जलता रहता है।

4. ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि ईश्वर से बढ़कर इस संसार में निम्न लोगों को सम्मान देनेवाला कोई नहीं है। समाज के निम्न वर्ग को उचित सम्मान नहीं दिया जाता है परन्तु ईश्वर किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करते हैं। अछूतों को समभाव से देखते हुए उच्च पद पर आसीन करते हैं ।

5. नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै

उत्तर:- इस पंक्ति का भाव यह है कि ईश्वर हर कार्य को करने में समर्थ हैं। वे नीच को भी ऊँचा बना लेता है। उनकी कृपा से निम्न जाति में जन्म लेने के उपरांत भी उच्च जाति जैसा सम्मान मिल जाता है।

अत्यंत अनिवार्य एवं महत्त्वपूर्ण प्रश्न -

9. रैदास के इन पदों का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

पहला पद – रैदास के पहले पद का केंद्रीय भाव यह है कि वे उनके प्रभु के अनन्य भक्त हैं। वे अपने ईश्वर से कुछ इस प्रकार से घुलमिल गए हैं कि उन्हें अपने प्रभु से अलग करके देखा ही नहीं जा सकता।

दूसरा पद – रैदास के दूसरे पद का केंद्रीय भाव यह है कि उसके प्रभु सर्वगुण संपन्न, दयालु और समदर्शी हैं। वे निडर है तथा गरीबों के रखवाले हैं। ईश्वर अछूतों के उद्धारक हैं तथा नीच को भी ऊँचा बनाने की क्षमता रखनेवाले सर्वशक्तिमान हैं।

प्रश्न - रैदास की दास्य भक्ति से क्या अभिप्राय है ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर - इस भक्ति पद्धति में भक्त स्वयं को दास अर्थात सेवक मानता है और ईश्वर को अपना स्वामी । भक्त अपने को साधारण दीन-हीन मानता है और ईश्वर को दीनों पर दया करने वाला भक्त वत्सल दयालु । इस भक्ति में ईश्वर को दीनबन्धु, निर्भीक, दयालु और शक्तिशाली माना जाता है ।

धन्यवाद